अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2024

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

अपने युवा

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आईआईएम रांची में कार्यक्रम और रांची विश्वविद्यालय में संगोष्ठी का किया गया आयोजन

'मिले सुर मेरा तुम्हारा' गीत से भाषाई एकता का संदेश

विविधता का प्रदर्शन

- भाषाई विविधता को बढ़ावा देने को प्रतिबद्धता को रेखांकित किया
- पुस्तकालय विविध भाषाई विरासतों के संरक्षण में देते हैं योगदान

रांची, प्रमुख संवाददाता। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर बुधवार को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता आईआईएम रांची के निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव ने की। इस कार्यक्रम में संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध भाषाओं के प्रदर्शन के माध्यम से भारत की समृद्ध भाषाई विविधता का प्रदर्शन किया गया।

प्रत्येक भाषा ने प्रस्तावना के पहले वाक्यांश, हम, भारत के लोग, को प्रतिध्वनित किया, जो देश की सांस्कृतिक और भाषाई विरासत को दर्शाता है। विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें प्रदर्शित की गईं, जो भारत के विविध लेकिन साझा सांस्कृतिक और बौद्धिक परिदृश्य की अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। विभिन्न भाषाओं के महाकाव्यों को दर्शाने वाले पोस्टर कार्यक्रम स्थल पर सजे हुए थे, जो स्थानीय साहित्य के सांस्कृतिक महत्व बता रहे थे।

कार्यक्रम की शुरुआत- मिले सुर मेरा तुम्हारा, गीत की प्रस्तुति के साथ हुई, जिसमें भारत की भाषाई बहुलता के उत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया गया। प्रतिभागियों ने अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के ऐतिहासिक संदर्भ पर बात की। निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव ने शिक्षा और सीखने में भाषाओं के महत्व पर बात। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भाषा और सामाजिक बुद्धिमत्ता आपस में जुड़ी हुई अवधारणाएं हैं, जो मानव संपर्क और संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रो श्रीवास्तव ने फ्रेंच, जर्मन में पाठ्यक्रम और जल्द ही जनजातीय भाषाओं पर एक पाठ्यक्रम की पेशकश कर भाषाई विविधता को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

लाईब्रेरियन डॉ जयंत कुमार त्रिपाठी ने कहा कि पुस्तकालय ज्ञान के भंडार के रूप में काम करते हैं, मातृभाषाओं सहित विभिन्न भाषाओं में किताबें, दस्तावेज और संसाधन रखते हैं। वे विभिन्न भाषाओं से जुड़े साहित्य, इतिहास और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इस प्रकार विविध भाषाई विरासतों के संरक्षण में योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि पुस्तकालय सभी 22 क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों के संग्रह से समृद्ध होगा।

आईआईएम रांची में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में सभी ने भाषाई विविधता का प्रदर्शन किया। • हिन्दुस्तान

संस्कृति से होगा मातृभाषा का संरक्षण: डॉ हरि उरांव

रांची, प्रमुख संवाददाता। रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता टीआरएल संकाय के समन्वयक डॉ हरि उरांव ने की। उन्होंने कहा कि मातृभाषा को बचाने के लिए हमें अपनी संस्कृति को बचाना होगा। जिस समाज की मातृभाषा का विकास नहीं हुआ, वह समाज और क्षेत्र विपुल संसाधनों के बावजूद भी कभी विकास नहीं कर पाया।

डॉ उमेश नंद तिवारी ने कहा कि कहा कि विकास की प्रथम सीढ़ी हमारी मातृभाषा है। डॉ किशोर सुरीन ने कहा कि भाषा अपने समाज की प्रतिबिंब होती है, इसका सम्मान और संरक्षण करना हमारा दायित्व है। डॉ दिनेश कुमार दिनमणी ने मातृभाषा के महत्व व उद्देश्य को रेखांकित करते हुए कहा कि लुप्त हो रही भाषाओं पर सिर्फ चिंता व्यक्त करने से समस्या का समाधान नहीं हो सकता है, सबको इस दिशा में मिलकर काम करना होगा। डॉ रीझू नायक ने कहा कि भाषा मां के दूध के समान है। मनय मुंडा ने कहा कि भाषा एक-दूसरे को जोड़ने का काम करती है। डॉ बंधु भगत ने कहा कि मातृभाषा को स्कूली स्तर पर बढ़ावा देना होगा, इन्हें रोजगार परक बनाना होगा। डॉ सरस्वती गागराई, प्रेम मुर्मू, तारकेश्वर मुंडा ने भी अपने विचार साझा किए।

08 वीं अनुसूची में सूचीबद्ध भाषाओं की समृद्धि का प्रदर्शन

22 क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों से समृद्ध होगा आईआईएम

डॉ सुरीन ने कहा-भाषा समाज का प्रतिबिंब होता है, इसका सम्मान और संरक्षण करना हमारा दायित्व

गोस्सनर कॉलेज में मातृभाषा दिवस मना

रांची। गोस्सनर कॉलेज में बुधवार को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। संस्कृत विभाग की अध्यक्ष डॉ ज्योति टोप्पो ने कहा कि यह हमारी संस्कृति और पहचान से जुड़ा है। मानवशास्त्र विभाग की प्राध्यापक डॉ मीना तिर्की ने कहा कि आज आदिवासी भाषाओं पर संकट मंडरा रहा है। इन भाषाओं को बचाने के लिए अपने घरों से ही पहल करने की आवश्यकता है। कॉलेज के शिक्षक प्रतिनिधि अमरदीप तोपनो ने कहा कि आदिवासियों की भाषाओं को बचाने के लिए कारगर कदम उठाने की आवश्यकता है। डॉ योताम कल्लू ने कहा कि भाषा संरक्षण को निरंतर प्रयोग होना चाहिए।

Hindustan_22.02.2024_Pg. 7

आइआइएम में हुआ भाषाई विविधता का प्रदर्शन

जासं, रांची : आइआइएम रांची ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। जिसमें निदेशक प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव की उपस्थिति रही। लाइब्रेरी के सहयोग से सांस्कृतिक समिति द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध भाषाओं के प्रदर्शन के माध्यम से देश की समृद्ध भाषाई विविधता का प्रदर्शन किया गया। विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें प्रदर्शित हुईं, जो विविध लेकिन साझा सांस्कृतिक परिदृश्य की अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

Dainik Jagran_22.02.2024_Pg. 04

आइआइएम रांची में मातृभाषा दिवस मनाया गया

रांची.आइआइएम रांची में बुधवार को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मना. आयोजन की शुरुआत विद्यार्थियों ने मिले सुर मेरा तुम्हारा.... गीत से की. विद्यार्थियों ने प्रस्तुति के माध्यम से देश की विविधता को भाषा से जोड़े रखने का संदेश दिया. साथ ही देश में बोले जाने वाली विभिन्न मातृभाषाओं को पीढ़ीगत शिक्षा को बढ़ावा देने में जरूरी बताया. मौके पर निदेशक प्रो दीपक श्रीवास्तव ने कहा कि शिक्षा के विस्तार में मातृभाषा अहम भूमिका अदा करती है.

Prabhat Khabar_22.02.2024_Pg. 9